بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक12.02.16मस्जिद बैतुल फ़तूह,लंदन।

विशुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें। नफ़लें अदा करें, दान करें, रोज़े रक्खें। दुआ के बिना तथा अल्लाह तआला की रहमत को जोश लाने के अतिरिक्त हमारे लिए कोई मार्ग नहीं है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. अपने विभिन्न सम्बोधनों में, ख़ुत्बों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा बयान की हुई कुछ शिक्षाप्रद बातें तथा कथाएँ बयान फ़रमाते हैं, विभिन्न अवसरों पर मैं ये बयान करता रहा हूँ। आज भी यही बयान करूंगा।

एक ख़ुत्बः में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने यह विषय बयान फ़रमाया है कि अल्लाह तआला जब किसी को अपनी ओर से खड़ा करता है अथवा नबियों को भेजता है तो उनकी सहायता एंव समर्थन भी फ़रमाता है और यदि सत्य प्रकट करने के लिए दुनया की बड़ी आबादी को उनके अनुचित कार्यों के कारण दंड देना चाहे तो परवाह नहीं करता और दंड देता है। इस संदर्भ में एक कहानी जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई उसका वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि बचपन में हमें कहानियाँ सुनने का बड़ा चाव था। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहते तो आप हमें ऐसी कहानियाँ सुनाते जिन्हें सुनकर प्रेरणा मिलती। एक बार आपने हमें एक कहानी सुनाई कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में तूफ़ान इस कारण से आया कि लोग उस समय बड़े गन्दे हो गए थे तथा पाप करने लगे थे। वे जैसे जैसे अपने गुनाहों में बढ़ते जाते, ख़ुदा तआला की दृष्टि में उनका मूल्य गिरता जाता। अंततः एक पहाड़ की चोटी पर कोई वृक्ष था और वहाँ घोंसले में चिड़िया का एक बच्चा बैठा हुआ था। उस बच्चे की माँ कहीं गई और फिर वापस नहीं आ सकी। सम्भवतः मर गई अथवा अन्य कोई कारण हुआ कि वापस नहीं आई। उस चिड़िया के बच्चे को प्यास लगी तथा वह प्यास के कारण तड़पने लगा और अपनी चोंच खोलने लगा। तब ख़ुदा तआला ने यह देखकर अपने फ़रिश्तों को यह आदेश दिया कि जाओ और धरती पर पानी बरसाओ और इतना बरसाओ कि पानी उस पहाड़ की चोटी पर जो पेड़ है उसके घोंसले तक पहुंच जाए ताकि चिड़िया का बच्चा पानी पी सके। फ़रिश्तों ने कहा, ख़दाया! वहाँ तक पानी पहुंचाने में तो पूरी दुनया डूब जाएगी। ख़ुदा तआला ने उत्तर दिया कि कोई चिंता नहीं, इस समय दुनिया के लोगों का मेरी दृष्टि में इतना भी मूल्य नहीं जितना इस चिड़िया के बच्चे का है।

अतः यद्यपि यह एक कहानी है परन्तु इस कथा में यह शिक्षा है कि सत्य एंव सदाचार से रिक्त दुनया पूरी की पूरी मिलकर भी ख़ुदा तआला की दृष्टि में एक चिड़िया के बच्चे जितना भी मूल्य नहीं रखती। अतः आज इस कहानी से जहाँ हम यह शिक्षा लेते हैं कि सच्चाई पर खड़ा होना चाहिए। अपना निरीक्षण भी करना चाहिए कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस लिए माना कि दीन को दुनया पर प्राथमिकता देंगे, अपने भीतर की बुराईयाँ दूर करेंगे तथा नेकियों की स्थापना करेंगे। परन्तु समय के साथ साथ हमारी दशाओं में यदि उन्नति के बजाए अवनति हो रही है, हमारी स्थिति का पतन हो रहा है तो हम अपने उद्देश्य से दूर हट रहे हैं तो फिर अल्लाह तआला को भी हमारी कोई चिंता नहीं होगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने विश्व की अत्यधिक दयनीय दशा का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि भूचाल, तुफ़ान, ये उपद्रव, अत्यधिक वर्षा जिनके द्वारा विनाश फैला हुआ है, यह इस कारण से है कि गुनाहों की अति हो रही है और यह तो अभी चेतावनी

है जो अल्लाह तआला दे रहा है, सचेत कर रहा है अल्लाह तआला। अतः इस संदर्भ में भी अहमदियों का बहुत बड़ा काम है कि दुनया को सावधान करें तथा बताएँ कि यदि अपने सुधार की ओर ध्यान न दिया तो अल्लाह तआला दुनया में अत्यधिक विनाश कारी जटिलताएँ ला सकता है। अल्लाह करे कि दुनया सद्बुद्धि से काम ले।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फ़रमाया- दुनया में अपने अधिकार की बातें होती हैं चाहे इसके द्वारा अन्य लोगों को कितनी ही हानि उठानी पड़े। इस्लाम की शिक्षा यही है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना अधिकार लेने तथा इस पर डटे रहने के बजाए दूसरे के अधिकारों को देने तथा उनको क़ायम करने का प्रयास करे। इसके अंतर्गत हुज़ूर पुर नूर ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा का एक बड़ा ही ईमान वर्धक बयान फ़रमाया। जापान के वर्तमान दौरे में एक ईसाई पादरी जो बड़े सज्जन पुरुष हैं, मुझसे उन्होंने सवाल किया कि अमन की क्या परिभाषा है, किस प्रकार स्थापित किया जाए, कहने लगे कि मुझे अभी तक संतुष्ट उत्तर नहीं मिला कहीं से कि क्या परिभाषा है शांति की। तो मैंने उन्हें यह बताया, पहले मैं बता चुका हूँ कि इस्लाम यह कहता है कि जो अपने लिए पसन्द करो वही दूसरे के लिए पसन्द करो, जब ऐसा करोगे तो एक दूसरे के अधिकार क़ायम कर रहे होंगे और जब हक़ क़ायम करोगे तो अमन होगा। एक दूसरे के लिए फिर तुम सलामती भी भेज रहे होगे। कहने लगे यह परिभाषा मेरे हृदय को बड़ी लगी है, यह पहली बार सुनी है।

फ़रमाया- अतः आज इस्लाम ही प्रत्येक विषय में वास्तविक मार्ग दर्शन कर सकता है परन्तु इसके सक्रिय उदाहरण दिखाए बिना हम दुनया को निरुत्तर नहीं कर सकते। अनुचित रूप से अधिकारों के हनन का तो प्रश्न ही नहीं यदि हम जायज़ हक़ भी छोड़ने के लिए तय्यार हो जाएँ तो अमन क़ायम होगा। हुज़ूर-ए-अनवर ने हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन का एक ईमान वर्धक वृत्तांत सुनाया कि एक बार दोनों में तकरार हो गई परन्तु इसके बावजूद कि इमाम हुसैन ने अति की थी, इमाम हसन ने उनसे पहले क्षमा मांगी तथा इसका कारण यह बयान फ़रमाया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जब दो व्यक्ति आपस में लड़ पड़ें तो उनमें से जो पहले सन्धि करता है वह जन्नत में दूसरे से पाँच सौ वर्ष पहले प्रवेश करेगा। तो मेरे मन में यह सुनकर यह विचार पैदा हुआ कि कल मैंने हुसैन से बुरा भला सुना तथा उन्होंने मुझसे दुर्व्यवहार किया अब यदि हुसैन मेरे पास क्षमा मांगने के लिए पहले आ पहुंचे और उन्होंने सन्धि कर ली तो मैं तो दोनों जहान से गया कि यहाँ भी मुझपर विषमता हो गई तथा अगले जहान में भी मैं पीछे रहा। अतः मैंने यही निर्णय किया कि मेरे साथ जो दुर्व्यवहार हो गया है, वह तो हो गया, अब मैं उनसे पहले माफ़ी मांग लूंगा ताकि इसके बदले में मुझे जन्नत तो पाँच सौ वर्ष पहले मिल जाए। अतः यह वह सोच है जिसे हमें अपने ऊपर लागू करना चाहिए।

एक अन्य रूचिकर घटना बयान करने के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यह उदाहरण इस लिए दिया करते थे कि दुनया के झगड़े निरर्थक होते हैं। मेरा क्या और तेरा क्या, सेवक का तो कुछ भी नहीं होता। वह तो जब अपने आपको कहता है कि मैं अब्दुल्लाह हूँ तो इसका अभिप्रायः यह होता है कि अब उसका कुछ भी नहीं है।

फ़रमाया- हम जो नबुव्वत के ज़माने से दूर जा रहे हैं तथा आगे और अधिक दूर जाते रहेंगे तो हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए। पहले भी इस संदर्भ में ध्यान दिला चुका हूँ कि हमें बड़ा सावधान रहना चाहिए। हमें पहले से बढ़कर इस बात को समझने की आवश्यकता है कि हमने किस प्रकार अब्दुल्लाह बनने का हक़ अदा करना है तथा अपनी हठ और अहंकार छोड़ना है तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति का प्रयास करना है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह वर्ष भी चुनाव का वर्ष है। जमाअत के भीतर भी इस वर्ष चयन होने हैं इसके विषय में भी अपने विचारों को ठीक करने की आवश्यकता है कि दुआ के बाद हर एक निकट सम्बंध, हर एक रिश्ते को छोड़कर अपना अधिकार जो है वह उचित रूप से प्रयोग करें, अपना विमर्श दें तथा इसके बाद जो निर्णय हो जाए उसको स्वीकार कर लें। प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से अपनी व्यक्तिगत सोच से ऊपर होकर अपने निर्णय करें। ज़ैली तंज़ीमों में भी इस प्रकार के प्रश्न उठते रहते हैं कि क्यूँ अमुक को बनाया गया है, वह तो ऐसी है, वैसी है? तो इस प्रकार की निर्रथक बातों से बचना चाहिए हमें और जो भी बना दिया जाए इस अन्तराल के लिए जो भी हो, जब तक वह बनाया गया है उसके साथ पूर्णतया सहयोग करना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने सय्यदना मुस्लेह मौऊद रज़ी. के हवाले से बयान फ़रमाया कि मोमिन को चाहिए कि दृढ़ संकल्प के साथ प्रयास करे तथा उसे पूरा करे और दूसरों पर निर्भर होने के बजाए चाहे वे अफ़सर हों या ओहदेदार हों, वे केवल अपने आधीनों पर निर्भर न हुआ करें अपितु स्वयं भी प्रत्येक कार्य की निगरानी रक्खें तथा involve होने का प्रयास करें तभी कार्य सुचारू रूप से अंजाम तक पहुंच सकता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यदि हमारी जमाअत ने चाहना ही नहीं, तो कुछ नहीं हो सकता परन्तु यदि वह चाहे तो बड़े बड़े विशाल कार्य भी दिनों में कर सकते हैं। अतः यह हममें से प्रत्येक की सोच होनी चाहिए कि हमने केवल यदि चाहने तक नहीं रहना है बल्कि चाहना है और चाहने के साथ ही अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ इस काम को करना है, अल्लाह तआला से मदद भी मांगनी है। विशेष रूप से इस बात को मैं देखता हूँ जब नमाज़ों का सवाल आता है, कई लोग मेरे पास आते हैं कि हमारे लिए दुआएँ करें हम चाहते हैं कि नमाज़ों में अभयस्त हो जाएँ परन्तु अभयस्त नहीं। शेष कामों का यदि हम चाहते हैं तो कर लेते हैं परन्तु नमाज़ को चाहते हैं, क्यूँकि बे-दिली से चाहते हैं सम्पूर्ण क्षमताएँ इसके लिए उपयोग में नहीं लाते, अल्लाह से मदद नहीं मांगते इस लिए नमाज़ों की आदत भी नहीं पड़ती। इस प्रकार के लोगों का चाहना जो है वह वास्तव में न चाहना होता है। यह हो ही नहीं सकता कि यदि इंसान चाहे भी और काम न हो सके। नमाज़ इनके लिए वास्तव में एक निम्न चीज़ होती है संसारिक कार्य पहली प्राथमिकता होती है जो एक अनुचित क्रिया है इस लिए इसके अनुसार काम नहीं होता। यह किस प्रकार सम्भव है कि मनुष्य चाहे भी, एक दृढ़ निश्चय भी हो इसके लिए, करने का संकल्प भी हो और वह कार्य न हो। अतः ये सुस्तियाँ होती हैं और अरूचि होती है जिसको अकारण ही चाहने का नाम दे दिया जाता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हमने स्वयं सुना है कि जब कोई बादशाह या अमीर किसी स्थान पर जाता है तो उसका सेवक भी साथ जाता है। उसे भीतर जाने के लिए अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती, जो भी उसके साथ होता है। आजकल भी देख लें मनिस्टर आते हैं, अन्य लोग आते हैं, उनके जो प्रोटोकोल अफ़सर हैं अथवा उनके अंग रक्षक होते हैं, सब साथ जाते हैं, अनुमति उनके लिए नहीं ली जाती कि वे भी साथ आएँगे। फ़रमाया कि तुम्हारी स्थिति कितनी भी तुच्छ हो यदि तुम फ़रिश्तों से सम्बंध स्थापित कर लो तो वे जहाँ भी जाएँगे तुम उनके साथ जाओगे। अल्लाह तआला के साथ सम्बंध स्थापित होगा तो उसके फ़रिश्तों के संग सम्बंध स्थापित होगा तुम उनके अरदलियों तथा चपरासियों में शामिल हो जाओगे। यदि वे लोगों के दिलों एंव दिमाग़ों में जाएँगे तो तुम भी उनके साथ जाओगे। अतः फ़रमाते हैं कि तुम इस महान शक्ति को समझो जिसे ख़ुदा तआला ने तुम्हारे लिए बनाया है। तुम्हारी शक्ति आध्यात्म के संग सम्बंधित है, तुम इसे सशक्त बनाने के लिए फ़रिश्तों के साथ अधिक से अधिक सम्बंध स्थापित करो ताकि तुम्हें लोगों के दिलों तक पहुंच प्राप्त हो जाए। यदि तुम्हें लोगों के हृदय तक पहुंच प्राप्त हो जाए सारे पर्दे दूर हो जाएँगे और जहाँ ख़ुदा तआला का नूर पहुंचेगा तुम भी वहाँ पहुंच जाओगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः इस मूल सिद्धांत को नितांत याद रखना चाहिए कि जब एक स्थान पर एकत्र होते हैं, चाहे वे जलसे हों, इज्तिमा हों। जब आध्यात्म के विकास के लिए एकत्र होते हैं तो फिर इसको प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए और अपनी गोष्ठियों को केवल अस्थाई रूप में रूहानी मज्लिसें न बनाएँ बल्कि ऐसी बनाएँ कि आध्यात्मिक प्रभाव सदैव स्थापित रहें और फिर फ़रिश्ते भी हमारी सहायता करने वाले बन जाएँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि कुछ सहाबा कहते हैं कि जब रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुआएँ करते देखते तो हमें यह ऐसा प्रतीत होता कि जैसी हंडिया जोश से उबल रही है। अतः अपनी आत्मा की शुद्धि की ओर ध्यान दो तथा तक़्वा एंव पवित्रता पैदा करो।

अतः यह मत सोचो कि हम शुभ कार्यों में लगे हैं, यह मत विचारो कि हम नेक संकल्प रखते हैं। कितना ही नेक काम इंसान कर रहा हो उसमें से बदी पैदा हो सकती है और कितना ही शुभ संकल्प मनुष्य रखता हो उसके ईमान को बिगाड़ सकता है क्यूँकि ईमान हमारे कर्मों के परिणाम से नहीं आता बल्कि अल्लाह तआला के रहम के परिणाम स्वरूप आता है। यह मूल सिद्धांत है, याद रखना चाहिए। हमारे कर्म जितने भी हों यदि अल्लाह तआला का रहम नहीं, उसकी कृपा नहीं तो फिर ईमान सम्पूर्ण नहीं हो सकता। अतः तुम सदैव अल्लाह तआला के रहम पर निगाह रक्खो और तुम्हारी दृष्टि सदैव उसके हाथों की ओर उठे क्यूँकि

वह सवाली जो यह समझता है कि अल्लाह तआला के द्वार से उठने के पश्चात मेरे लिए कोई अन्य द्वार नहीं खुल सकता, वह अल्लाह तआला की कृपा को ग्रहण कर लेता है। अतः तुम्हारी नज़र हर समय अल्लाह तआला की ओर ही उठनी चाहिए। अतः सदैव क्षमा याचना और इस्तिग़फ़ार तथा अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को मांगना, उसकी दया को मांगना और उसको ग्रहण करने का प्रयत्न करना यही चीज़ें हैं जो शुभ परिणाम की ओर लेकर जाती हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु एक स्थान पर अहमदियत के एक विरोधी का वर्णन करते हुए, जिसने यह बड़ मारी थी आपके सामने, कि हमने फ़ैसला कर लिया है कि हम अहमदियत को कुचल देंगे। आप फ़रमाते हैं कि मैं भी उसे ऐसा ही उत्तर दे सकता था कि तुम कुचल कर तो देखो। परन्तु मैंने उसे कहा कि मिटाना किसी को या न मिटाना या क़ायम रखना, यह ख़ुदा तआला का अधिकार है। यदि वह हमें मिटाना चाहे अर्थात अल्लाह तआला, तो आप लोगों को किसी प्रयास की आवश्यकता ही नहीं है, स्वयं ही मिटा देगा। परन्तु यदि वह हमें क़ायम रखना चाहे तो कोई कुछ नहीं कर सकता और तक़वा ही है जो इंसान को इस प्रकार के दावों से बचाता है कि मैं यह कर दूंगा और वह कर दूंगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ अर्थात हमने निश्चय कर लिया है कि हम और हमारे रसूल ही ग़ालिब होंगे।

ख़ुदा तआला के वादों पर हमें इतना विश्वास है कि जितना अपनी जान पर भी नहीं है। अतः अहमदियत ने तो ग़ालिब आना है, चाहे हमारे जीवन काल में आए अथवा बाद में परन्तु हमें इस ग़ल्बः का अंश बनने के लिए तक़्वे पर स्थापित रहने की अत्यधिक आवश्यकता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- कुछ वर्ष पूर्व मैंने कहा भी था कि जमाअत को रोज़े रखने चाहिएँ और जमाअत में अभी तक कुछ ऐसे हैं जो इस पर क़ायम हैं। फ़रमाया- कम से कम अब हमें चालीस रोज़े, साप्ताहिक ही रक्खें, अभिप्रायः यह है कि चालीस सप्ताह तक रोज़े रक्खें विशेष रूप से और दुआएँ करें और नफ़ल अदा करें, दान करें क्यूँकि जो परिस्थितियाँ हैं जमाअत की कुछ स्थानों पर, उनमें अत्यधिक कठोरता एंव कट्टरता आती जा रही है। जब हम अल्लाह तआला के समक्ष चिल्लाएँगे तो जिस प्रकार बच्चे के रोने से माँ की छातियों में दूध उतर आता है आसमान से, हमारे रब्ब की सहायता इन्शाअल्लाह तआला नाज़िल होगी तथा वे रुकावटें एंव विषमताएँ जो हमारे मार्ग में हैं, जिनका दूर करना हमारे सामर्थ्य में नहीं है, हम दुश्मन की ज़बान को बन्द नहीं कर सकते और उसके क़लम को नहीं रोक सकते, उनकी ज़बान और क़लम से वह कुछ निकलता है जिसे सुनने और पढ़ने को हम सहन नहीं कर सकते।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- पाकिस्तान में तो अहमदियों के विरुद्ध क़ानून भी है तथा क़ानून विरोधियों की सहायता करता है, विरोधी जो चाहें करते हैं। जो मुंह में आता है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध बकवास और अपशब्दों का प्रयोग करते हैं, अहमदियों को अत्याचार का निशाना बनाया जाता है। अदलतें जो हैं वे भी अब तनिक सी बात पर दंड देने पर तुली हुई हैं। अतः इसके लिए तो हमें अत्यधिक ख़ुदा तआला के समक्ष चिल्लाने की आवश्यकता है। विशेष रूप से पाकिस्तान के अहमदियों को इस ओर पहले से बढ़कर ध्यान देने की आवश्यकता है। शुद्ध होकर अल्लाह तआला के आगे झुकें, नफ़लें अदा करें, दान करें, रोज़े रक्खें दुआ के बिना तथा अल्लाह तआला की रहमत को जोश में लाने के अतिरिक्त हमारे लिए कोई मार्ग नहीं है। अल्लाह तआला विशेष रूप से उन अहमदियों को जहाँ ये अत्याचार हो रहे हैं, जिन जिन देशों में हो रहे हैं अथवा जिन स्थानों पर हो रहे हैं, ऐसी दुआओं की तौफ़ीक़ दे जो अल्लाह तआला के सिंहासन को हिलाने वाली हों और सामान्यत्या पूरे विश्व के अहमदियों को भी जमाअत के प्रगति करने और अत्याचारों से बचने के लिए दुआओं की ओर ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला सामर्थ्य प्रदान करे।